उदभावना

जन भावनाओं का साझा मंच

अंक : 157-158

मूल्य : 60 रुपये

क्रोनी कैपिटलिज़्म

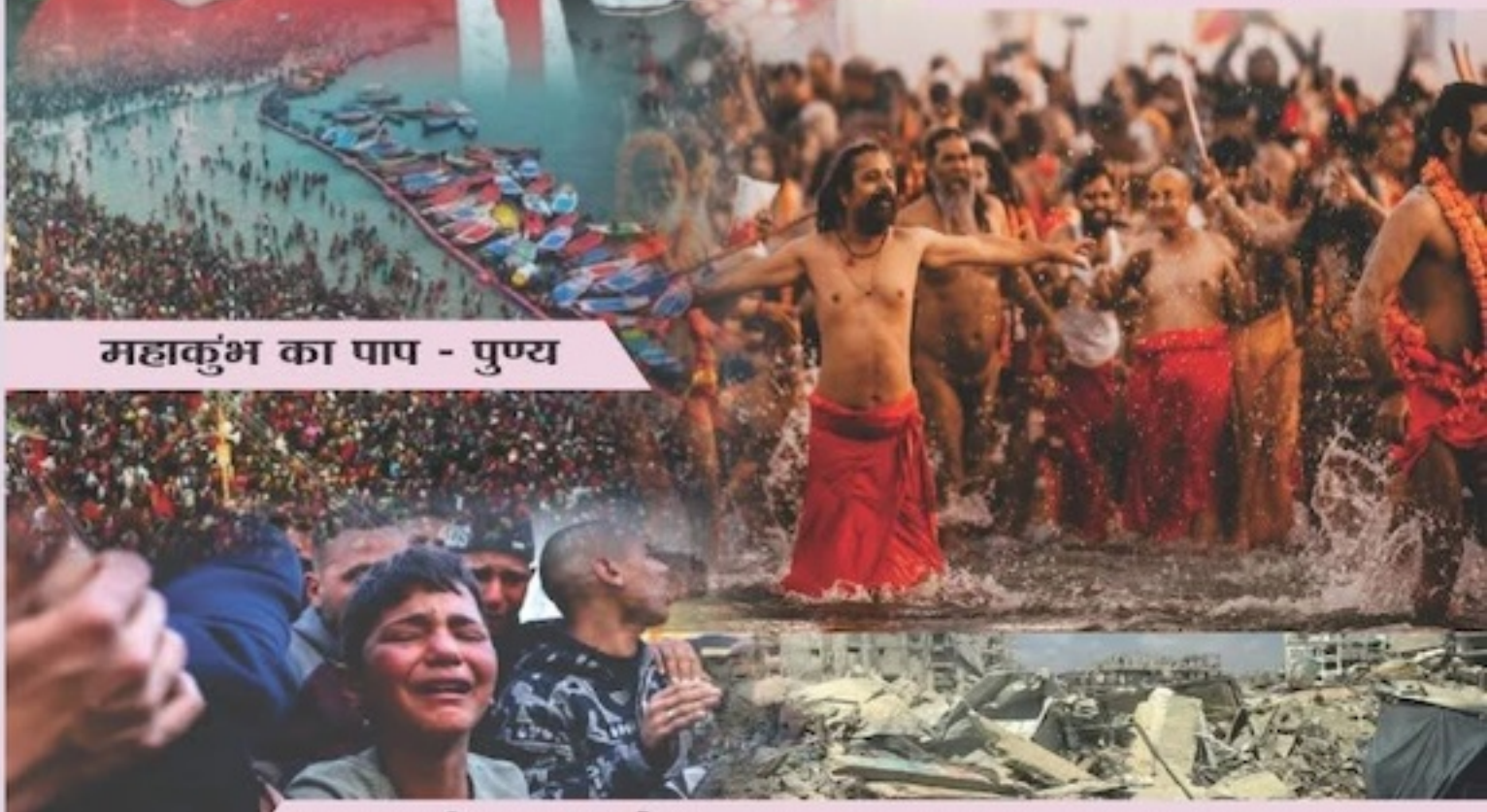

महाकुंभ का पाप - पुण्य

घर सभी कब्र लगें (गज़ा में मरने वालों की संख्या 50,000 के पार हुई)

उद्भावना

वर्ष : 38 अंक : 157-158

मार्च 2025 में प्रकाशित

सलाहकार मंडल

डॉ. राजकुमार शर्मा,
राजेश जोशी, रामप्रकाश त्रिपाठी

संपादक मंडल

अजेय कुमार (संपादक)
प्रियदर्शन, मुशर्रफ अली
विनीत तिवारी

सहयोग

रामपाल कटवालया

संपादकीय पता

एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाजियाबाद

पत्राचार का पता

ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रिअल एरिया,
जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095
मो. 9811582902

E-mail : pd.press@gmail.com

आवरण : राजकुमार

सहयोग राशि

यह अंक	:	60 रु.
वार्षिक	:	350 रु.
संस्थानों से वार्षिक	:	600 रु.
आजीवन (व्यक्ति)	:	5000 रु.
आजीवन (संस्थानों के लिए)	:	8000 रु.

सभी मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट
'उद्भावना' के नाम से पत्राचार के पते पर ही भेजें.
जो पाठक हमारे अकाउंट में सीधे जमा करना चाहते हैं, वे कृपया निम्न सूचना देखें

अकाउंट : UDBHAVANA
अकाउंट न. : 90261010002100
बैंक : Canara Bank
ब्रांच : राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-110060
IFSC : CNRB0019026

आजीवन सदस्यों को अब तक छपे सभी उपलब्ध महत्त्वपूर्ण विशेषांक भेंट स्वरूप दिए जाएंगे

पत्रिका में छपे विचार लेखकों/लेखिकाओं के अपने हैं, उनसे संपादकीय सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

क्रोनी कैपिटलिज़्म पर विशेष

लेखन व संपादन : मुशर्रफ अली

क्रोनी कैपिटलिज़्म यानि सांठगांठ वाला पूंजीवाद- **मुशर्रफ़ अली**-5, क्रोनी कैपिटलिज़्म और भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र पर इसके प्रभाव, मोदी, अडानी और मोनोपॉली-**सत्येंद्र रंजन**-11, एक तरफ अडानी, दूसरी तरफ सारा मुल्क, **अरविन्द मोहन**-14

महाकुंभ पर

महाकुंभ का 'पाप-पुण्य'- अमरेंद्र कुमार राय-46, भगदड़-शंकरानंद, 49 मैं भगदड़ में कुचलकर नहीं मरा था- शरद कोकास-49 महाकुंभ पर त्रिलोचन के सॉनेट्स-50

ग़ज़ा में कत्लेआम

मारे गए फिलिस्तीनियों में कई चित्रकार, कवि, लेखक और मूर्तिकार भी शामिल हैं।-19, हमारे बच्चों के आँसू-21, जनसंहार ने फिलिस्तीनियों की जिंदगी छोटी कर दी-23, (**विजय प्रसाद** के तीन पत्र) शायद कहानी बनता देश-**नूर ज़हीर**-25

कविताएँ

प्रियदर्शन द्वारा अनूदित विदेशी कविताएँ-30, मदन कश्यप-32, नेहा नरूका-33, हरि मृदुल-62, उर्मिल मोंगा-63, उज्ज्वल पांडेय-64

कहानियाँ

आत्मांत–कला कौशल-34, अकेली-गजेन्द्र रावत-39 पवित्र शौचालय-सतीश चंद्र 'सतीश'.43

व्यंग्य

गोमूत्र-गोबर युग	**विष्णुनागर**	51

टिप्पणियाँ

लिखने-बोलने वालों पर बढ़ते संकट	**प्रियदर्शन**	3
क्या नारायण गुरु सनातन धर्म का भाग हैं?	**राम पुनियानी**	53
हमारे पढ़ने-लिखने की सुविधा पर यह वज्राघात!	**डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल**	65

साहित्य

कुमार अंबुज की कविता		
निराशाएँ अपनी गतिशीलता में आशाएँ हैं	**शंभु गुप्त**	55
कार्ल मार्क्स और गुजराती कविता	**सुल्तान अहमद**	68

खेल

विश्व शतरंज के सबसे छोटे बादशाह गुकेश	**मनोज चतुर्वेदी**	66

श्रद्धांजलि

नाद के उपासक तबला नवाज़ उस्ताद ज़ाकिर हुसैन	**शशि प्रभा**	73
श्याम बेनेगल के साथ एक सपना चला गया	**प्रियदर्शन**	75

पुस्तक समीक्षा

नंद चतुर्वेदी रचनावली-**एकता मंडल**-78, एक नई सुबह-**मुशर्रफ अली** 81, आवाज़-परवाज़-**प्रो. सुरेश सिंघल**-83, फटी हथेलियाँ-**रामकिशोर मेहता**-85

सांस्कृतिक समाचार

श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफको साहित्य सम्मान-88, पुस्तक 'सुर्ख सवेरे का शायर' का विमोचन-89, 'भविष्य के स्वर' विचार-पर्व का आयोजन-90, तरुण भारतीय की स्मृति सभा-92, जन संस्कृति मंच मऊ का आयोजन-94, गुजरात में इप्टा का गठन-**विनीत तिवारी**-95

अपनी बात

उत्पादकता का कहर

कभी कभी हम लोगों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दफ्तरों में जाना पड़ता है तो हमें व्हाइट ग्लास के क्यूबिकल्स में बैठे युवा–युवतियां दिख जाती हैं, जिनके सामने कंप्यूटर की स्क्रीन चमक रही होती है। मध्यम–वर्ग के अधिकांश बच्चे जो ऐसे दफ्तरों में काम करते हैं, प्रायः सुबह घर से 8 बजे निकल लेते हैं और रात को 8–9 बजे वापस आते हैं। उनके बीवी–बच्चे और मां–बाप अपने बच्चों के साथ से महरूम रह जाते हैं। मैं अपने बच्चों से यही कहता हूं कि कम कमा लो, परन्तु कुछ समय अपने परिवार के लिए अवश्य निकालो। ''Life is time'', यानी जीवन और कुछ नहीं, समय ही तो है। अगर आप अपनी कंपनियों को अधिक समय देते हो तो आप यह मान लो कि आप अपना जीवन उन्हें दे रहे हो। नींद और आनंद के लिए आपके पास कम समय बचता है जिससे डिप्रेशन, ब्लॅड प्रेशर, शूगर व कई अन्य बीमारियां आपको घेर लेती हैं। आप कुछ भी क्रिएटिव नहीं कर पाते। मेरी जनरेशन के लोग अपने बहुत से जीवन–मूल्यों को बच्चों तक नहीं दे पाए क्योंकि उनके पास साहित्य या कोई अन्य आर्ट के लिए समय ही नहीं है। राजनीतिक व सामाजिक परिवर्तन के लिए सोचने समझने व उसकी बेहतरी के लिए समय निकालना तो बहुत दूर की बात है।

ऐसे में जब इंफोसिस कंपनी के संस्थापक नारायण मूर्ति युवा पीढ़ी के नाम अपील जारी करते हैं कि उसे एक सप्ताह में 70 घंटे काम करना चाहिए (इसमें प्रतिदिन 2 घंटे आने जाने के शामिल कर लें तो यह 82 घंटे हो जाएगा) तो पहली बात जो मेरे मन में आती है कि क्या नारायणमूर्ति के यहां कोई बाल–बच्चे नहीं हैं। नारायण मूर्ति यह समझाना चाहते हैं कि ज़िंदगी में और कुछ भी मैटर नहीं करता, आप में तकनीकी काबिलियत होनी चाहिए, आप में शारीरिक क्षमता होनी चाहिए कि आप केवल अपने कैरियर और अपनी कंपनी के ग्राफ के बारे में सोचें तभी आप ''विकसित भारत'' के सपने को साकार कर सकेंगे। नारायण मूर्ति जब इस तरह की बातें प्रचारित करते हैं तो दरअसल वे यह संदेश भी दे रहे होते हैं कि उन्होंने खुद मेहनत की और आज वे यहां तक पहुंचे हैं। इसमें पूंजी के पैरोकारों का यह ज्ञान भी छुपा होता है कि आप अमीर हैं क्योंकि आपने कड़ी मेहनत की है और गरीब लोग इसलिए गरीब हैं क्योंकि ''साले सुस्त हैं, काम करके राज़ी नहीं''।

नारायण मूर्ति को अपनी आंखें खोलकर कभी किसी आम मुहल्ले की गृहिणी से, किसी दिहाड़ी मज़दूर या छोटे कारखानों में धुंए के बीच काम कर रहे वर्कर से, खेतों में काम कर रहे खेतीहर मज़दूर से जो कड़ी धूप व बारिश में खेतों में खटता है, सोसाइटियों में कार्यरत सिक्योरिटी गार्ड या ई–रिक्शा चलाने वाले ड्राइवर से बात करनी चाहिए तो उन्हें पता चलेगा कि उनमें से अधिकतर दिन–रात काम करते हैं, कभी–कभी तो प्रति सप्ताह 70 घंटों से भी ज्यादा। कुशल मज़दूरों को माह में 15000 रु. तक की कमाई कर पाना दूभर है। वे गरीब हैं, इसलिए नहीं कि वे आरामपरस्त हैं, उन्होंने गरीबी में रहने का चुनाव नहीं किया है। वे गरीब इसलिए हैं क्योंकि नारायण मूर्ति जैसे मालिकों ने उन तक ''उत्पादकता'' या ''आर्थिक वृद्धि'' के फलस्वरूप हुए प्रॉफ़िट को निचले स्तर पर तक पहुंचाने में कोई कदम नहीं उठाया है। यह न्यायोचित विकास नहीं है और ''विकसित भारत'' का नारा भी केवल अदानियों–अंबानियों–मूर्तियों तक ही सीमित रहेगा! इसे समझने में 'कम्युनिस्ट' होने की ज़रूरत नहीं। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि भारत में ही नहीं, दुनिया भर के कार्पोरेट घरानों में, सी.ई.ओ का वेतन शॉप फ्लोर पर काम करने वाले कर्मचारी के वेतन से दो–ढाई हज़ार गुना है। 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार इंफोसिस फ्रेश ग्रेजुएट को साल में 3.72 लाख रु. का पैकेज देता है परन्तु सी.ई.ओ का वेतन लगभग इससे 2200 गुना है। वह ग्रेजुएट जब 70 घंटे काम करेगा तो उसे मानसिक व मनोवैज्ञानिक रोगों से ग्रस्त होने की संभावनाएं बढ़ जांएगी। उसकी तनख्वाह कितनी भी क्यों न हो उसने बेशक रेमंड का ''कम्पलीट मैन' का सूट पहना हो परन्तु काम के बोझतले वह आध्यात्मिक दरिद्रता का शिकार होगा। उसे बच्चों और बीवी के साथ सिनेमा देखने की फुर्सत नहीं मिलेगी। तलाक के मामलों में बढ़ौतरी के पीछे एक मुख्य कारण यह भी है कि घर के मर्द को और प्रायः उसकी कार्यरत बीवी को भी काम, काम और काम के अलावा कुछ भी सूझता नहीं।

एक बार मेरे कवि मित्र ने मुझसे पूछा कि क्या तुमने चाँद की ओर देख कर रात में कभी कोई गाना गुनगुनाया है? मुझे ना कहना पड़ा। फिर उसने कहा कि अपने बेटे से पूछना! मैंने पूछा तो वह हँसने लगा! मित्र को बतलाया तो उसने कहा कि अभी भी दुनिया में उस जैसे ''पागल'' लोग हैं जो आज भी सूर्यास्त को देखकर विन्सेंट वॉन गॉग की पेंटिंग को याद कर लेते हैं, वह एक तितली को उड़ते हुए देखते हैं तो उन्हें कोई कविता याद आ जाती है। जीवन किसी विलासपूर्ण एयरकंडीशंड दफ्तर में बेतहाशा काम करते हुए बॉस द्वारा दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का नाम नहीं है और न ही वीकेंड पर किसी बार में अंधाधुध पीने का नाम है। ''वर्क हार्ड, पार्टी हार्ड'' का नारा देकर नारायण मूर्तियों ने कितने नौजवानों को बर्बाद किया है, इसे भी उत्पादकता के आंकड़ों के साथ कंपनी में प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

इस बार फिर यह अंक आप तक देरी से पहुंच रहा है, हमेशा की तरह क्षमाप्राथी हूँ।

25–3–2025

अजेय कुमार